शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २२ : नई दिल्ली : २-८ सितम्बर २०१२

विकास महोत्सव के अवसर पर
परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा समुच्चारित गीत

सन्तो! भैक्षव शासन में नव्य विकास चाहिए।
सतियों! भैक्षव शासन में भव्य विकास चाहिए।।
अमल आश्वास चाहिए।।
विमल विश्वास चाहिए।।

आगम स्वाध्याय करें हम, श्रुत से अज्ञान हरें हम।
जीवन में सम्यक् ज्ञान प्रकाश चाहिए ।।१।।

शासन भण्डार भरें हम, शत दीक्षा लक्ष्य वरें हम।
श्रमणी - मुनियों का पुष्ट प्रयास चाहिए ।।२।।

विकसित हो आत्मसाधना, निर्मल हो संघ शासना।
तेजस्वी तेरापथ संन्यास चाहिए ।।३।।

तुलसी महाप्रज्ञ प्रभुवर, जिनशासन है क्षेमंकर।
श्रद्धामय 'महाश्रमण' उच्छ्वास चाहिए।।
जसवल का यशःपूर्ण इतिहास चाहिए ।।४।।

लय :- यह है जगने की बेला.....।

विकास महोत्सव के पावन अवसर पर
परम श्रद्धेय आचार्यवर का मंगल उद्बोधन

विकास महोत्सव का ध्येय सूत्र

आर्हत वांग्मय में एक चरण प्राप्त होता है--**'वड्ढमाणो भवाहि य।'** वर्धमान बनो। विकास महोत्सव का एक ध्येय सूत्र या आधारभूत सूत्र आर्षवाणी के एक इस चरण को माना जा सकता है। वर्धमान बनो--इसके दो अर्थ निकाले जा सकते हैं, किन्तु मूल अर्थ यही है कि आगे बढ़ते रहो। भगवान महावीर का एक नाम वर्धमान है, सहजतया वह भी स्मृति में आ सकता है और हम इसकी दूसरी कल्पना यह कर लें कि सब महावीर बनो, वर्धमान बनो।

भाद्रव शुक्ला नवमी का दिन विकास महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। आज विकास महोत्सव का जो आधारभूत पत्र है, उसे पूर्णतया अथवा कुछ अंशों में पढ़कर सुनाना चाहूंगा।

(आचार्यवर ने विकास महोत्सव के पत्र का वाचन किया, जिसमें आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के हस्ताक्षर हैं)

हमारे धर्मसंघ में विकास हुआ है, हो रहा है। समय-समय पर इसकी समीक्षा भी होनी चाहिए कि जितना विकास होना चाहिए था, उतना हुआ कि नहीं? उतना न हुआ हो या विकास निर्धारित या वांछित दिशा में न हुआ हो, ह्रास की ओर चले गए हों, इसकी समीक्षा होनी चाहिए। इस प्रकार समीक्षा होती है तो विकास अच्छा हो सकता है। जहां कोई ध्यान ही नहीं, चिंतन नहीं, प्रवर्तन नहीं, निवर्तन नहीं, सारणा नहीं, वारणा नहीं, वहां फिर विकास में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

तेरापंथ के तीन संस्करण

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने विकास के लिए कितना प्रयास किया था। सौभाग्य से उनका साया हमें प्राप्त हुआ। किस प्रकार वे स्वयं भी विकास का प्रयास करते थे और दूसरों को विकास की प्रेरणा देते थे, सारणा भी करते थे और वारणा भी करते थे। जैसा कि मैंने संवत्सरी के दिन कहा था कि तेरापंथ को अगर एक ग्रंथ के रूप में देखा जाए तो उसका पहला संस्करण तो आचार्य भिक्षु के समय सामने आया। उस ग्रंथ का दूसरा संस्करण प्रज्ञापुरुष जयाचार्य के समय में आया और मैं भूल न करूं, ठीक समीक्षा करूं तो उस ग्रंथ का तीसरा संस्करण गुरुदेव तुलसी के समय में आया था।

तेरापंथ को गुरुदेव तुलसी ने कितनी सेवा दी थी। आप देखें कि वर्षों तक उस व्यक्तित्व ने अकेले संघ का नेतृत्व किस प्रकार संभाला था। वे छोटी अवस्था (बाईस वर्ष) में आचार्य बन गए थे। उस समय लंबे काल तक न तो उनके पास कोई युवाचार्य था, न कोई महाश्रमण उनके पास था। साध्वीप्रमुखा जरूर होती थी जो मुख्यतया साध्वियों की व्यवस्था की दृष्टि से सहयोग देने का कार्य संभालती थी, पर संपूर्ण संघ की दृष्टि से युवाचार्य उनके पास लंबे काल तक नहीं थे। महाश्रमण की व्यवस्था भी बहुत बाद में शुरू हुई थी। उस अकेले व्यक्तित्व ने कितना कार्य किया, धर्मसंघ के संचालन का। मर्यादा महोत्सव के समय साधु-साध्वयों के चतुर्मासों की निर्धारणा कितना महत्त्वपूर्ण काम होता है। उसमें भी कुछ श्रम करना होता है, कितनों को सुनना होता है, सोचना होता है। घोषणाएं होती हैं, उसमें तो मान लो आधा घंटा, पौन घंटा या घंटा भर लगता होगा, किन्तु उस आधा घंटा, पौन घंटा या घंटा भर की घोषणा के पीछे गुरुदेव तुलसी समय कितना लगाते थे।

हमारे संघ के सरताज गुरुदेव तुलसी ने किस प्रकार पराक्रम और पुरुषार्थ किया था, अकेले भी किस रूप में कितना काम किया था। मैं स्मरण करता हूं उस बात का जब वि.सं.२०१९ में आतमा गांव में गुरुदेव तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी (टमकोर) से कहा कि तुम भी मेरे पास बैठो। कोई ओळिए के पन्ने रखे थे, उसे इंगित कर कहा कि तुम भी साथ में बैठो। अब तक मैं अकेला करता आया हूं, अब तुम भी साथ हो जाओ और काम में सहयोग करो। लगभग छब्बीस वर्ष तक तो उन्होंने अकेले ही काम किया। वि.सं.२०१९ तक कोई युवाचार्य नहीं था। एक मुनि के रूप में किसी से काम कराया जा सकता है, किन्तु एक युवाचार्य से जो काम कराया जा सकता है, वह काम तो एक मुनि से कराना प्रायः कठिन ही होता होगा, फिर भी गुरुदेव ने कहा कि अब तक मैं अकेला करता था, अब तुम भी मेरे साथ हो जाओ काम करने में। गुरुदेव तुलसी का उन पर कितना विश्वास था।

हमने आचार्य महाप्रज्ञजी को देखा। तेरापंथ के विकास में उनका कितना योगदान है। गुरुदेव तुलसी को अगर मैं एक सम्राट के रूप में देखूं तो आचार्य महाप्रज्ञ को उनकी मुनि अवस्था में कुछ अंशों में उनके महामंत्री के रूप में देखा जा सकता है। युवाचार्य तो वे बाद में बने थे, उसके पहले ही वे संघ

के कार्यों में मुनि के रूप में गुरुदेव तुलसी का सहयोग करने लगे थे। संघ में आज इतना सारा परिवर्तन आया है, इतना विस्तार हुआ है, लेकिन प्रारंभ से लेकर गुरुदेव तुलसी के समय तक विरोध और संघर्ष भी बहुत आए हैं। मुनिश्री नथमलजी स्वामी (टमकोर) आन्तरिक और बाह्य संघर्ष में गुरुदेव तुलसी के साथ जुड़े रहे। इस प्रकार तेरापंथ के विकास में मुनि अवस्था से लेकर युवाचार्य और फिर आचार्य पद के अंतिम दिन तक आचार्य महाप्रज्ञजी की कितनी छत्रछाया और उनका कितना योगदान रहा है। तेरापंथ के दस आचार्यों को या यों कहें हम अपने पूर्वाचार्यों के काल को देखें तो दसों आचार्यों का संघ के विकास में कितना योगदान है। किसी को मैं किंचित भी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखता। मेरे लिए तो दसों आचार्य बारंबार सम्माननीय हैं, वंदनीय हैं, स्मरणीय हैं।

संघ की सुरक्षा करना भी कोई सामान्य काम नहीं है। किसी के कार्यकाल में विकास ज्यादा हो, किसी के काल में कम हो, क्योंकि समय और परिस्थितियों का भी अपना प्रभाव होता है, पर संघ की परंपरा को आगे से आगे चलाए रखना, उसको अक्षुण्ण बनाए रखना बहुत बड़ी सेवा है। हम अतीत पर दृष्टिपात करें तो प्रारंभ से लेकर गुरुदेव महाप्रज्ञजी तक के काल में संघ के विकास में दसों आचार्यों का बड़ा योगदान रहा है।

पारदृश्यता रहे संस्थाओं में

हमारे धर्मसंघ में आज कितनी-कितनी संस्थाएं हैं और उन संस्थाओं के द्वारा विभिन्न गतिविधियां संचालित हो रही हैं। कितनी केन्द्रीय और कितनी स्थानीय संस्थाएं हैं। हमारे श्रावक लोग या कार्यकर्ता उनमें अपना समय लगाते हैं और भौतिक रूप में अर्थ का भी सहयोग देते हैं। वे सेवा देते हैं, समय लगाते हैं और श्रम करते हैं। इस प्रकार वे संस्थाओं के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। केन्द्रीय संस्थाओं की गतिविधियों को देखकर मुझे काफी संतोष होता है। मेरा चिंतन रहता है कि हमारी संस्थाओं के कार्य में पारदृश्यता बराबर बनी रहे और कहीं भी अनैतिक काम न हो, जो अकरणीय है, ऐसा काम कभी भी संस्थाओं में, चाहे वे केन्द्रीय संस्थाएं हों या स्थानीय, नहीं होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि न करने योग्य काम बहुत हो रहा है। मैं तो एक सीख दे रहा हूं सुझाव के तौर पर कि आज भी ध्यान रहे और आगे भी ध्यान रहे कि संस्थाओं में कहीं भी अनैतिकता नहीं रहनी चाहिए, क्योंकि समाज संस्थाओं पर विश्वास करके उदारतापूर्वक अर्थदान भी देता है। उस पैसे में कहीं कोई अनैतिकता की बात न हो जाए और मैं तो यहां तक कहता हूं कि किसी ने पैसा दिया अमुक काम के लिए और उस पैसे का उस काम में न होकर किसी अन्य काम में उपयोग होता है तो यह भी सोचने की बात है। देनेवाले ने किस विश्वास के साथ पैसा दिया है, किस गतिविधि के लिए पैसा दिया है। यदि वह पैसा कहीं और लग जाए तो यह भी एक सोचने की बात हो जाती है।

घोषणा और स्वामित्व का परित्याग

समाज के लोग अर्थ दान करते हैं। मैं यह भी सोचता हूं कि कोई आदमी अर्थदान की घोषणा कर देता है और बाद में कार्यकर्ताओं को बार-बार उसकी प्राप्ति के लिए चक्कर लगाना पड़े, यह भी कोई अच्छी बात मुझे नहीं लगती। जब समाज के लिए तुमने सोचा है, निर्णय किया है, घोषणा की है तो उसकी क्रियान्विति भी तुम्हारा कर्तव्य हो जाता है। समाज तुम्हारा है और तुम भी समाज के ही अंग हो। तुम्हारे द्वारा घोषित अनुदान को प्राप्त करने के लिए बार-बार तुम्हारे घर के चक्कर क्यों लगाने पड़े? घोषणा कर दी अनुदान की तो सोचना यह चाहिए कि जल्दी से जल्दी मैं उसके स्वामित्व से मुक्त हो जाऊं, स्वामित्व का परित्याग कर दूं। यह भावना उत्तम होती है।

अच्छा काम कर रही है कल्याण परिषद

हमारी केन्द्रीय संस्थाएं स्वस्थ रूप में पवित्र गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहें। मैंने

कल्याण परिषद का प्रकल्प प्रस्तुत किया और हमारे विनीत कार्यकर्ताओं ने उसको इंप्लीमेंट करना भी शुरू कर दिया। मैंने उस परिषद की संगोष्ठी में हर महीने की २९ तारीख भी निश्चित कर दी है कि केन्द्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री उस दिन दर्शन करें, मध्याह्न में लगभग दो से तीन बजे तक सामूहिक रूप से हमारी उपासना और सेवा करें तो उस समय चिंतन-मंथन हो सकेगा। उसके लिए न तो हमारी ओर से कोई सूचना होगी और न कोई आवास, भोजन आदि की व्यवस्था, बस, एक श्रावक के रूप में दर्शन करें और सामूहिक रूप में सेवा करें। कल्याण परिषद के लिए एक घंटा का समय मैं यथासंभव रिजर्व रखने का प्रयास कर रहा हूं। मुझे काफी संतोष हो रहा है और अच्छा लग रहा है कि नई-नई बनी कल्याण परिषद अच्छे ढंग से अपना काम कर रही है। कल्याण परिषद का एक अच्छा रूप सामने आया है।

महत्त्वपूर्ण हैं संघीय गतिविधियां

हमारे धर्मसंघ में संघीय गतिविधियां चलती हैं। भावी पीढ़ी को संस्कारी और तत्त्वज्ञान संपन्न बनाने के लिए ज्ञानशाला एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। हालांकि मेरा एक चिंतन है कि यह अनावश्यक खर्चीली गतिविधि नहीं बननी चाहिए। सभा पर अनावश्यक ज्यादा भार पड़े, ऐसी बात नहीं होनी चाहिए और अच्छे ढंग से बालपीढ़ी का विकास हो, इस बात की उपेक्षा भी नहीं होनी चाहिए। क्योंकि बालपीढ़ी हमारी एक संपदा है। गृहस्थों में ही नहीं, हमारे संतों और साध्वियों की भी बालपीढ़ी है। हमारी इस बालपीढ़ी का अच्छा विकास हो, उसकी अच्छी साधना चले, यह हमारा प्रयास रहता है। हमारे साधु-साध्वियों को इस पर ध्यान देते रहना है। ध्यान रखना है कि बालपीढ़ी में विनय आदि के अच्छे संस्कार आएं, यह पीढ़ी ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़े, आगम पढ़े और भी ग्रंथ पढ़े, आचारनिष्ठा और गहरी संघनिष्ठा के संस्कार पुष्ट हों, ऐसा हमें प्रयास करना चाहिए। ज्ञानशाला का काफी विस्तार हुआ है, इसका और भी विस्तार होना चाहिए, ताकि बालपीढ़ी को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके।

उपासक श्रेणी का भी विकास हुआ है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के युग से यह उपासक श्रेणी चल रही है। एक समय था जब पांच-छह ग्रुप पर्युषण में जाते थे। इस बार संभवतः सौ से ज्यादा ग्रुप पर्युषण की यात्रा में बाहर गए हैं। उपासिका के रूप में बाइयां भी काम करती हैं, भाई भी काम करते हैं। यह श्रेणी भी काफी अच्छे ढंग से विकसित हुई है। हालांकि विकास का और अवकाश है। विकास की इतिश्री की बात नहीं है। विकास की गति मंद नहीं होनी चाहिए, अवरुद्ध नहीं होनी चाहिए। करणीय की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

हमारे संघ की कुछ सार्वजनिक कल्याण की गतिविधियां भी हैं, जैसे--अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान आदि। इनका भी क्रम चल रहा है। मैंने पिछले दिनों सिवांची-मालानी में प्रवेश के बाद प्रेक्षाध्यान की एक रूपरेखा बनाई और संतों को बताई है। जीवनविज्ञान की भी रूपरेखा बताई है कि कैसे हमारा यह काम सुव्यवस्थित रूप में आगे बढ़े। अणुव्रत के लिए हमने कुछ सोचा है। गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी के दो प्रोग्राम मैंने मुख्य माने हैं। दोनों में वरीयता की दृष्टि से पहला प्रोग्राम है महाव्रत का विस्तार और दूसरा प्रोग्राम है अणुव्रत का प्रसार। महाव्रत का विस्तार--इसका मतलब है हमने सौ दीक्षाओं का टारगेट बनाया है। सन् २०१४ में गुरुदेव की जन्मशताब्दी (कार्तिक शुक्ला द्वितीया) की संपन्नता हो और सन २०१४ की कार्तिक शुक्ला तृतीया का सूर्योदय हो, उससे पहले-पहले सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं, ऐसा प्रयास हमने शुरू किया है। हमारे साधु-साध्वियां और समणश्रेणी इस दिशा में अच्छा प्रयास करते रहें। यह प्रयास हो भी रहा है और आगे भी होता रहे। सौ के टारगेट की दिशा में आगे बढ़ने का हमें सक्षम कदमों के साथ प्रयास करना चाहिए।

तेरापंथ अमृत संसद अनस्तित्व में

हमारे धर्मसंघ में तेरापंथ विकास परिषद है, अमृत संसद भी है। पिछले अर्से कल्याण परिषद की

गोष्ठी में हमने इनके बारे में चिंतन भी किया और कुछ निर्णय के रूप में लिखा भी है। उसके बारे में कुछ जानकारी देना चाहता हूं--

तेरापंथ विकास परिषद से भी पहले तेरापंथ अमृत संसद है। विकास परिषद से पहले जन्म हुआ है अमृत संसद का। क्योंकि मैं इससे काफी जुड़ा रहा हूं, इसलिए मेरे ध्यान में कई बातें हैं। कानोड़ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में जो श्रावक सम्मेलन हुआ था, बाद में उसका रूप बना था अमृत संसद का। गुरुदेव तुलसी के युग से वह चला आ रहा है। मेरा मानना है कि आदमी को रूढ़िवादी कभी नहीं रहना चाहिए। विकास महोत्सव के परिपत्र में अभी मैंने पढ़ा भी था कि रूढ़िवाद ठीक नहीं है। अपेक्षा हो तो परिवर्तन करना चाहिए। अपेक्षा न हो तो जैसा है, वैसा ही रखना चाहिए। न हमारा परिवर्तन से मोह होना चाहिए, न हमारा स्थायित्व से मोह होना चाहिए। जो भी विकास कारक चीज हो, जिससे ज्यादा भला हो सके, जो विकास में उचित और उपयोगी लगे, उसको लेने या जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। मैंने कल्याण परिषद की गोष्ठी में कार्यकर्ताओं के साथ चिंतन-मंथन किया और उसके बाद जो निष्कर्ष निकाला है, उसे आज सार्वजनिक रूप में बताया जा रहा है कि अब अमृत संसद का यह कार्यकाल तो लगभग संपन्नता की ओर है। इसलिए आज साढ़े ग्यारह बजे से 'तेरापंथ अमृत संसद' का अस्तित्व एक बार समाप्त मान लिया जाए। कम से कम ३१ दिसम्बर २०१३ तक तो वह वापस जागृत हो ही नहीं, वापस अस्तित्व में आए ही नहीं। उसके बाद जैसी अपेक्षा होगी, जैसा अवसर होगा, बताया जाएगा। जब तक इस बारे में कुछ कहा या बताया न जाए, तब तक वह आगे भी अनस्तित्त्व में मानी जाए। अमृत सांसदों ने जो काम किया है, पवित्र निरवद्य काम किया है, उसकी अनुमोदना है। विकास महोत्सव आ गया तो उनका कार्यकाल वैसे भी अब संपन्न होने को है। हमने उसको बीच में स्थगित नहीं किया। अमृत संसद को उसके कार्यकाल के बीच में भंग नहीं किया। कार्यकाल की पूर्णता के बाद नए सिरे से उसका गठन न हो, ऐसा जो निर्णय किया था, उसे ही लागू किया जा रहा है तो इस तरह अमृत संसद अब बंद रहेगी।

नवीन स्वरूप तेरापंथ विकास परिषद का

तेरापंथ विकास परिषद के बारे में भी चिंतन हुआ है। जो ढांचा अभी तेरापंथ विकास परिषद का है, आज साढ़े ग्यारह बजे (११.३० A.M.) से उसके स्वरूप में परिवर्तन आ जाए। तेरापंथ विकास परिषद का नवीन स्वरूप इस प्रकार रहेगा--

- तेरापंथ विकास परिषद आचार्य द्वारा मनोनीत सात सदस्यों के एक मण्डल के रूप में रहे।
- परिषद का प्रत्येक सदस्य आचार्य की दृष्टि के अनुसार समर्पित भाव से कार्य करने का प्रयास करे।
- प्रस्तुत परिषद का सदस्य तेरापंथ समाज से संबद्ध किसी भी केन्द्रीय अथवा स्थानीय संस्था व ट्रस्ट का पदाधिकारी, मनोनीत ट्रस्टी तथा कार्यकारिणी का सदस्य न रहे। यदि कोई है तो उसे मुक्त होना है।
- आचार्य द्वारा मनोनीत एक सदस्य संयोजक के रूप में कार्य करे।
- प्रत्येक सदस्य को केन्द्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष से भी अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाए।
- साधु-साध्वियों में जो स्थान बहुश्रुत परिषद का है, श्रावक समाज में वही महत्त्वपूर्ण स्थान तेरापंथ विकास परिषद का रहे।
- परिषद आर्थिक रूप से किसी संस्था व समाज पर निर्भर न रहे।
- परिषद के सदस्य स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता के अनुसार यथासंभव गुरुकुलवास में सेवा-उपासना करने का प्रयास करें।
- परिषद समाज की संस्थाओं को आचार्य की दृष्टि के अनुसार आध्यात्मिक पवित्र परामर्श देने की

अधिकारी रहेगी। परिषद के सदस्य संघीय विकास के संदर्भ में अपने सुझाव आचार्य को बता सकेंगे।

- परिषद के सभी सदस्य कल्याण परिषद के भी सदस्य रहें।
- परिषद का कार्यकाल अनिश्चित रहे।

श्री लालचन्द सिंघी संयोजक के रूप में तेरापंथ विकास परिषद को अपनी सेवा दे रहे हैं। एक प्रबुद्ध और चिंतनशील आदमी हैं, वेल एजुकेटेड पर्सन हैं और मैं उन्हें एक विनीत श्रावक के रूप में देखता हूं। वर्षों से ये काम कर रहे हैं। काफी अच्छे ढंग से तेरापंथ विकास परिषद का संचालन किया है। गुरुदेव महाप्रज्ञ की कृपा से ये एक अच्छे कार्यकर्ता हमें मिले। उन्होंने इनको काम करने की दृष्टि प्रदान की थी। बाद में मैंने इन्हें कन्टीन्यू कर दिया। सरदारशहर में विकास परिषद का आयोजन हुआ तो मैंने इन्हें मुक्त नहीं होने दिया और कहा कि आगे भी काम करते रहो। अब तो इन्हें लगभग छह वर्ष हो गए। छह वर्षों से काम करते आ रहे हैं और बहुत अच्छे ढंग से काम किया है। जितना इनसे संभव हो सका, अपनी बुद्धिमत्ता और सूझबूझ से काम किया है। सरकारी सर्विस में रहने वाले व्यक्ति के लिए समय निकालना भी एक मुश्किल काम है, फिर भी समय निकाल कर ये कितनी बार यहां केन्द्र में आते रहे हैं, हमसे बातचीत करते रहे हैं और संघ विकास का प्रयास करते रहे हैं।

अब उस परिषद में जो व्यक्ति होंगे, उनके नाम मैं बता रहा हूं--**शासनसेवी श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ (श्रीडूंगरगढ़) इस परिषद के संयोजक के रूप में होंगे।** ये हमारे धर्मसंघ के पुराने श्रावक हैं। गुरुदेव तुलसी के समय भी बहुत काम किया है, फिर गुरुदेव महाप्रज्ञजी के समय में भी रहे और अभी भी अपने सुझाव और विचार देते रहते हैं। बहुत पुराने और सूझबूझ वाले व्यक्ति हैं। हमारे साधु-साध्वियों की दृष्टि से भी इन्हें सेवा देने के अनेक अवसर मिलते रहे हैं। प्रबुद्ध और चिंतनशील हैं, समीक्षा करने वाले हैं, धर्मसंघ की बड़ी-बड़ी संस्थाओं में काम कर चुके हैं। अब मैं चाहूंगा कि वे विकास परिषद के संयोजक के रूप में काम करें और अपना खूब धर्मध्यान भी करें, साधना भी करें। ये जो सात सदस्य हैं, वे जितना हो सके, अपना धर्मध्यान भी खूब करें, स्वाध्याय करें, आगम का अनुवाद पढ़ें, साथ में तेरापंथ विकास के लिए अपनी पवित्र सेवाएं भी देते रहें।

कन्हैयालालजी छाजेड़ के अतिरिक्त अन्य सदस्यों में होंगे--**श्री गुलाबचन्दजी चिंडालिया (राजलदेसर), श्री सिद्धराज भंडारी (जोधपुर-जयपुर), श्री मांगीलालजी सेठिया (सुजानगढ़-दिल्ली), श्री मूलचन्दजी बोथरा (बीकानेर), श्री बुधमलजी दूगड़ (रतनगढ़-कोलकाता) और श्री बनेचन्दजी मालू (श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता)**

ये सात व्यक्ति हैं जो तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य मनोनीत किए जा रहे हैं। इन श्रावकों को बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में मैं देख रहा हूं। समाज और संघ की दृष्टि से ये अपनी आध्यात्मिक सेवाएं देते रहें, यह मैं उनके लिए मंगलकामना करता हूं। इन सातों का कार्यकाल आज साढ़े ग्यारह बजे (११.३० A.M.) से प्रारंभ माना जाए।

प्रभारी व्यवस्था स्थगित

हमारे धर्मसंघ में अनेक संस्थाएं हैं, अनेक-अनेक गतिविधियां हैं। इनके पथदर्शन या देखरेख के लिए साधु-साध्वियों को प्रभारी/सहप्रभारी बनाया गया है। आज भी हमारे अनेक साधु-साध्वियां प्रभारी/सहप्रभारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनमें से कुछ न्यारा में हैं, काफी यहां पर हैं। अंतरंग या बहिरंग गतिविधियों के प्रभारी/सहप्रभारी साधु-साध्वियों ने जो सेवाएं दी हैं, उन सेवाओं का मैं सम्मान करता हूं। इतना समय लगाया है, इतना काम किया है, इसके लिए उन्हें साधुवाद।

अब एक दूसरी बात--आज मैं ससम्मान प्रभारी/सहप्रभारी व्यवस्था अनिश्चितकाल के लिए समाप्त कर रहा हूं। अंतरंग और बहिरंग किसी भी गतिविधि के प्रभारी/सहप्रभारी साधु-साध्वियों को बहुत सम्मान के साथ मुक्त किया जा रहा है। यह भी आज साढ़े ग्यारह बजे (11.30 A.M.) से लागू हो जाएगा।

भविष्य में जब भी अपेक्षा होगी, साधु-साध्वियों की सेवा ली जा सकेगी। वैसे तो उनकी सेवाए ली ही जा रही हैं। साधु-साध्वियां कितनी सेवा देते हैं। अपेक्षानुसार हम आगे भी कभी भी कोई भी सेवा ले सकते हैं, कोई काम सौंप सकते हैं।

साध्वियों को सम्बोधन

आज इस अवसर पर मैं कुछ साध्वियों को संबोधित करना चाहूंगा--

साध्वी चांदकुमारीजी लाडनूं की हैं। प्रौढ़ साध्वी हैं और अब तो इनको वृद्धावस्था में मान लें। बहुत काम किया है और काफी अच्छी साध्वी हमें प्रतीत हुई। आज मैं इन्हें **शासनश्री साध्वी चांदकुमारजी (लाडनूं)** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी यशोधराजी प्रबुद्ध साध्वी हैं। इनकी वक्तृत्व कला अच्छी है, दूर-दूर की यात्राएं भी कर चुकी हैं, संघ की सेवा भी की है। आज मैं इनको भी **शासनश्री साध्वी यशोधराजी** के रूप में स्वीकार करता हूं।

कई साध्वियां हमारी पढ़ी-लिखी भले ही न हों, या कम हों, लेकिन बहुत भद्र स्वभाव की हैं। साध्वी गुलाबकुमारीजी (सरदारशहर) मुझे ऐसी ही भद्र स्वभाव की साध्वी लगी। एक श्रद्धाशील और समर्पित साध्वी प्रतीत हुई। ये वयोवृद्ध हैं। सबकी अपनी-अपनी विशेषताएं होती हैं। मैं इनको भी **शासनश्री साध्वी गुलाबकुमारीजी (सरदारशहर)** के रूप में स्वीकार करता हूं।

एक साध्वी हैं साध्वी बिदामांजी (पीपली) जो अभी गुरुकुलवास में ही हैं। बहुत ही वृद्ध है, नब्बे पार कर चुकी हैं। जहां तक मैंने जाना और सुना, बहुत अच्छी साध्वी लगीं। आज उन्हें और एक साध्वी जो साध्वी सरस्वतीजी के साथ साध्वी सूरजकुमारीजी (बीदासर) हैं, वयोवृद्ध साध्वी हैं और अभी गुरुकुलवास में हैं। इन दोनों को **शासनश्री साध्वी बिदामांजी एवं शासनश्री साध्वी सूरजकुमारीजी (बीदासर)** के रूप में संबोधित करता हूं।

श्रावक-श्राविकाओं को संबोधन

श्री बच्छराजजी चोरड़ियाजी (टमकोर) मुनि देवेन्द्रकुमारजी एवं साध्वी श्वेतप्रभाजी के संसारपक्षीय पिता हैं। अपनी इन दो संतानों को इन्होंने शासन को दिया है। साध्वी वैराग्यश्रीजी (वर्तमान में अनशनरत) इनकी संसारपक्षीया धर्मपत्नी हैं। इन तीनों के दान को देखते हुए मैं बच्छराजजी चोरड़िया को **महादानी श्रावक** के रूप में स्वीकार करता हूं।

गंगाशहर के हमारे एक श्रावक थे श्री मूलचन्दजी श्यामसुखा। उन्होंने अपनी चार संतानें संघ को समर्पित कीं, जिनमें से तीन--मुनिश्री श्रेयांसकुमारजी स्वामी, मुनि अजितकुमारजी एवं साध्वी अनुशासनाश्रीजी धर्मसंघ में अपनी साधना कर रहे हैं। उनकी धर्मपत्नी ने भी संयम स्वीकार किया, जो साध्वी रूपमालाजी के रूप में कुछ वर्ष पूर्व दिवंगत हो चुकी हैं। आज स्वर्गीय **मूलचन्दजी श्यामसुखा** को मैं **'महादानी श्रावक'** के रूप में संबोधित करता हूं।

श्रावक **श्री मदनलालजी छाजेड़** एवं श्राविका **श्रीमती धर्मीदेवी छाजेड़ (समदड़ी)** की संसारपक्षीया तीन सुपुत्रियां--समणी परिमलप्रज्ञाजी, समणी रश्मिप्रज्ञाजी एवं समणी गौतमप्रज्ञाजी संघ में दीक्षित हैं। आज उन्हें भी मैं **महादानी श्रावक एवं महादानी श्राविका** के रूप में संबोधित करता हूं।

श्राविका **भीखीदेवी सेठिया (मोमासर)** साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी सुधाप्रभाजी एवं साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की संसारपक्षीया मां हैं। उन्हें भी **'महादानी श्राविका'** के रूप में स्वीकार करता हूं।

खमतखामणा का मनोहारी दृश्य

२२ अगस्त। क्षमापना का पावन अवसर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में प्रातः सूर्योदय

के कुछ क्षणों के पश्चात खमतखामणा का भव्य कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनि दिनेशकुमारजी ने 'मैत्री गीत' का संगान किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति, जसोल के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा, अध्यक्ष श्री जसराजजी बुरड़, महामंत्री श्री शान्तिलाल भंसाली, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री रमेश भंसाली, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती मैनादेवी भंसाली, कन्यामंडल की संयोजिका सुश्री नेहा चोपड़ा, किशोर मंडल के सहसंयोजक लालचन्द संकलेचा, राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत, अभातेयुप के सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़, पा.शिक्षण संस्था की ओर से श्री डूंगरमल बागरेचा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की ओर से श्री अरविन्द सालेचा ने सबसे खमतखामणा किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'व्यक्ति कितना ही विकास कर ले, यदि उसने क्षमा का अभ्यास नहीं किया तो उसे धर्म के द्वार में प्रवेश नहीं मिल सकता। आज के दिन हमें यही संकल्प करना है कि जहां कहीं भी हमसे कटुतापूर्ण, घृणापूर्ण और अनुचित व्यवहार हुआ है, हम उसे भूलकर अपने भीतर मैत्री का ऐसा पुष्प खिलाएं, जो हमें सुगंधित करे, हमारे परिवेश को सुगंधित बनाए और चारों ओर अपनी सुगंध फैलाए।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'धर्म का आदि सूत्र है--क्षमा। कोई धार्मिक बनना चाहे तो उसे क्षमा को सबसे पहले स्वीकार करना होगा। पूज्यवर के पावन सान्निध्य में हमने पर्युषण और संवत्सरी महापर्व की आराधना की। यह आत्मशोधन का पर्व है, इसलिए आज वर्ष भर में किसी के साथ हुए अप्रिय व्यवहार के लिए हम उससे क्षमायाचना करें। किसी अप्रिय घटना की गांठ मन में न रखें, तभी इस महापर्व का प्रायोगिक रूप आप अपने लिए सार्थक बना सकेंगे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आठ दिन पूर्व हमने परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अथवा आचार्यवर के साथ पर्युषण महापर्व के हिमालय पर चढ़ाई शुरू की थी। सात दिन हम लगातार बढ़ते-चढ़ते रहे और कल आठवें दिन उसके शिखर पर पहुंच गए। संवत्सरी इस महापर्व का शिखर दिन होता है। कोई व्यक्ति किसी साहसिक अभियान को पूर्ण करता है तो विजयस्वरूप झंडा फहराता है। हमें भी आज के दिन विजयध्वज फहराना है। आत्मा की निर्मलता, पवित्रता, समता या ग्रंथिमोचनरूपी विजयध्वज इस शिखर पर शोभित होता है। आज हम सबको अपनी-अपनी आत्मा को निर्मल बनाकर, अपने मन की ग्रंथियों को खोलकर अपने आपको पूरी तरह से हल्का बनाना है। आज के दिन अगर हम अपने मन के रोशनदानों और खिड़कियों को नहीं खोलेंगे तो भगवान महावीर की वाणी का प्रकाश हमारे अन्तःकरण का स्पर्श नहीं कर सकेगा। हमें अपने मन को पूरी तरह से खोलना है, ताकि हम प्रकाश का स्वागत कर सकें और उसे आत्मसात् कर सकें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर क्षमा की महत्ता को उजागर करते हुए सबसे प्रायोगिक रूप में खमतखामणा किया। खमतखामणा के जीवंत, मनोहारी और भावपूर्ण दृश्य को देखकर उपस्थित जनमेदिनी भावविभोर हो गई। पूज्यवर का पावन उद्‌बोधन पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है। पूज्यवर ने इस अवसर पर साधु-साध्वियों को वर्ष भर की आलोचना प्रदान करते हुए कहा कि जिन साधु-साध्वियों को प्रायः शौचालय का उपयोग करना पड़ा, उन्हें तीन-तीन उपवास तथा जिन्हें यदा-कदा उपयोग करना पड़ा, उन्हें दो-दो उपवास और जो साधु-साध्वियां साधन का उपयोग करते हैं, उन्हें तीन-तीन उपवास का प्रायश्चित्त दिया जा रहा है। आचार्यवर ने बारहव्रती श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष भर में लगे दोषों के लिए एक माह मिठाई के परिहार की आलोचना प्रदान की। मिठाई की निर्धारित परिभाषा इस प्रकार है--

१. वह वस्तु जिसे घी अथवा तेल से तला जाए तथा जिसमें चीनी आदि डाली जाए, जैसे घेवर, जलेबी आदि। २. जिसमें मिष्ट विगय डालकर गर्म किया जाए, जैसे - बादाम की कतली आदि। नोट (क) किसी भी प्रकार के गुड़ से निष्पन्न वस्तु, जिसमें चीनी आदि न हो, उसे मिठाई न माना जाए। (ख) मूल

तरल वस्तु को मिठाई में नहीं गिना जाए, जैसे - झाझरिया, चाय, कॉफी, खीर आदि। (ग) विगय की व्यवस्था में जो वस्तु निर्विगय में है, उसे मिठाई नहीं माना जाए। (घ) आइस्क्रीम, चॉकलेट, टॉफी आदि तथा ठोस रबड़ी को मिठाई में गिना जाए।

आचार्यवर के मंगल उद्‌बोधन के पश्चात साधु-साध्वियों ने सामूहिक रूप में परस्पर खमतखामणा किया। खमतखामणा की निर्धारित शब्दावली का उच्चारण मुनि दिनेशकुमारजी एवं साध्वी जिनप्रभाजी ने किया। शासनसेवी श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ द्वारा उच्चरित शब्दावली को दोहराकर श्रावक-श्राविका समाज ने पूज्यवर एवं साधु-साध्वियों से खमतखामणा किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया। आज दिन भर लोगों में खमतखामणा का क्रम चला।

पर्वाधिराज पर्युषण परिक्रमा

• पर्वाधिराज पर्युषण परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में धर्ममय एवं अध्यात्ममय वातावरण में मनाया गया। प्रातः से रात्रि तक धर्माराधना के विभिन्न कार्यक्रम चले। दैनंदिन कार्यक्रम की शृंखला प्रातः साढ़े पांच बजे अर्हत् वंदना के साथ प्रारंभ होती। सूर्योदय से पूर्व गुरु के श्रीमुख से मंगलपाठ का सभी श्रवण करते और उसके बाद दर्शनार्थियों की लंबी कतार लग जाती। साढ़े छह बजे से एक घंटे तक मुनि जयकुमारजी व मुनि नीरजकुमारजी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराते।

• साढ़े आठ बजे प्रातःकालीन कार्यक्रम का प्रारंभ हो जाता। मुनि दिनेशकुमारजी आगम पाठ का वाचन करते। लगभग नौ बजे पूज्य आचार्यवर का पदार्पण होता। निर्धारित विषयों पर साधु-साध्वियों और मंत्री मुनिश्री के वक्तव्य होते रहे। प्रथम दिन साध्वीप्रमुखाजी का भी उद्‌बोधन हुआ। भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा व विषय पर पूज्यवर के प्रेरक प्रवचन होते। प्रवचन के समय वीतराग समवसरण का नजारा अद्‌भुत होता। प्रायः जनाकीर्ण समवसरण में अधिकांश श्रावक-श्राविकाएं सामायिक की उपासना के साथ प्रवचन श्रवण करते। साधु-साध्वियों की प्रायः उपस्थिति रहती।

• प्रवचनोपरान्त शासनश्री मुनि किशनलालजी कायोत्सर्ग का प्रयोग कराते। मध्याह्न दो बजे साध्वी संवेगप्रभाजी व साध्वी रतिप्रभाजी सामूहिक जप का प्रयोग करातीं। ढाई बजे साध्वी कमलप्रभाजी व्याख्यान देती और साढ़े तीन बजे समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराती। सायं सामूहिक प्रतिक्रमण पारमार्थिक शिक्षण संस्था व जसोल कन्यामंडल की कन्याएं करवातीं।

• रात्रि में लगभग सवा आठ बजे अर्हत् वंदना से कार्यक्रम का प्रारंभ होता। १४ से १६ अगस्त तक रात्रि में 'तेरापंथ की आचार्य परंपरा' विषय पर मुनियों के वक्तव्य हुए। आचार्यश्री भिक्षु पर मुनि योगेशकुमारजी, आचार्यश्री भारीमाल पर मुनि धन्यकुमारजी, आचार्यश्री रायचन्द पर मुनि परमानंदजी, श्रीमज्जयाचार्य पर मुनि रजनीशकुमारजी, आचार्य मघवा पर मुनि नयकुमारजी, आचार्यश्री माणक पर मुनि अनंतकुमारजी, आचार्यश्री डालगणी पर मुनि मननकुमारजी, आचार्यश्री कालूगणी पर मुनि जितेन्द्रकुमारजी, आचार्यश्री तुलसी पर मुनि महावीरकुमारजी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ पर मुनि पुलकितकुमारजी के वक्तव्य हुए। मुनि विजयकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी ने गीत प्रस्तुत किए। मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने गीत प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम का संचालन किया। २० अगस्त की रात्रि में आचार्यश्री महाश्रमण के व्यक्तित्व पर निर्मित डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई तथा आचार्यवर के कुछ प्रवचन-अंशों की क्लिपिंग भी प्रस्तुत की गई।

• पर्युषण काल में नमस्कार महामंत्र का अखण्ड जप चला। प्रातः छह बजे से बारह घंटे तक जसोल के निर्धारित मोहल्लों से बहनें जप में संलीन रहतीं। उसी क्षेत्र से सायं छह बजे से बारह घंटे भाई जप करते। स्थानीय लोगों के साथ कुटीरों में सेवारत सेवार्थी भी जप में संलग्न हो जाते। जप अनुष्ठान का क्रम सुव्यवस्थित चला।

• २२ अगस्त को प्रातःकालीन खमतखामणा का नयनाभिराम कार्यक्रम चला।

• पर्युषण काल में तपस्या का अपूर्व ठाठ रहा। संवत्सरी के बाद सत्रह मासखमण संपन्न हुए। पर्युषण की अवधि में हजारों उपवास, सैकड़ों बेले की तपस्या के साथ ४०० तेले, १६६ अठाई तथा ६० नौ की तपस्या हुई। तपस्या के संदर्भ में पूज्य आचार्यप्रवर ने टिप्पणी की--'जसोल में तपस्या की अपरंपार महिमा है।' तपस्या का प्रत्याख्यान करने हेतु तपस्वी भाई-बहनों के नामों की लंबी सूची बोली जाती और मंच के पास उनके जमावड़े को देखने से लगता--कितना तपमय वातावरण निर्मित हुआ है। इसमें मुनि जिनेशकुमारजी का श्रम सहायक रहा।

• पर्युषण काल में प्रतिदिन पौषध होते रहे। संवत्सरी के दिन प्राप्त आंकड़ों के अनुसार सोलह प्रहरी चार, चौदह प्रहरी तीन, बारह प्रहरी छियालीस, अष्टप्रहरी चौदह सौ से अधिक, छहप्रहरी दो सौ से अधिक व चार प्रहरी पौषध दो हजार से अधिक हुए। उल्लेखनीय है--पूना निवासी छह वर्षीय यश सेठिया (सुपुत्र-राजेश सेठिया) ने अष्टप्रहरी तथा पांचवर्षीय लक्ष्य छाजेड़ (बालोतरा) ने चार प्रहरी पौषध किया।

• पर्युषण के नवाह्निक कार्यक्रम का संचालन प्रायः मुनि हिमांशुकुमारजी ने कुशलतापूर्वक किया। इस अवधि में दो दिन संचालन मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने किया।

दिव्य महापुरुष थे परमपूज्य कालूगणी

२३ अगस्त। भाद्रपद शुक्ला षष्ठी। तेरापंथ के अष्टमाचार्य परमपूज्य कालूगणी का महाप्रयाण दिवस। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथ कन्यामंडल, जसोल ने 'कालू अष्टकम्' का संगान किया। साध्वी मंजुबालाजी, साध्वी मंजुलाश्रीजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी अमृतप्रभाजी एवं साध्वी विधिप्रभाजी ने महामना कालूगणी के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की। मंत्री मुनिश्री ने कालूगणी के पुण्यशाली और चामत्कारिक व्यक्तित्व के विषय में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन शासन में आचार्यों का बहुत ऊंचा और महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। मैंने अष्टमाचार्य महामना पूज्य कालूगणी को देखा नहीं, किन्तु उनके दो महान शिष्यों को देखा है। उनके चरणों में रहने का सौभाग्य भी मुझे मिला है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी महामना पूज्य कालूगणी के सक्षम पट्टधर और भाष्यकार थे। उनके मन में अपने गुरु के प्रति कितना भक्तिभाव था। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के मन में भी अपने दीक्षा गुरु के प्रति बहुत सम्मान और आदर का भाव था। दोनों गुरुओं से मैंने परमपूज्य कालूगणी के बारे में कुछ सुना। महामना कालूगणी एक पुण्यवान आचार्य और एक दिव्य महापुरुष थे। पंचमाचार्य परमपूज्य मघवागणी के बड़े कृपापात्र शिष्य थे--मुनि कालूजी (छापर)। उनमें वत्सलता और कड़े अनुशासन का संगम था। मघवागणी की कोमलता और डालगणी की कठोरता--दोनों का योग मानों कालूगणी में समाहित था। मुनि नथमलजी स्वामी (बागोर), मुनि डूंगरमलजी स्वामी, मुनि सोहनलालजी स्वामी (चाड़वास), मुनि जसकरणजी स्वामी, मुनि जीवनमलजी स्वामी, मुनि गणेशमलजी स्वामी, मुनि जंवरीमलजी स्वामी, मुनि मिलापचन्दजी स्वामी आदि उनके द्वारा दीक्षित अनेक साधु वैशिष्ट्यसंपन्न थे। कालूगणी की निस्पृहता विशिष्ट थी। हम उस महान व्यक्तित्व के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते रहें और हमारा धर्मसंघ उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे।'

संयम से बनता है पवित्र जीवन

२४ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में जसोल की विभिन्न संस्थाओं की ओर से खमतखामणा का उपक्रम रहा। कार्यक्रम में रावल किशनसिंहजी, अणुव्रत समिति की ओर से श्री मोहनलाल खण्डेलवाल, लायंस क्लब की ओर से श्री कान्तिलाल ढेलड़िया, लघु उद्योग व्यापार मंडल की ओर से श्री डूंगरमल सालेचा,

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति की ओर से श्री भूपतराज कोठारी ने पूज्यप्रवर से क्षमायाचना की। कवि श्री खीमराज 'प्रदीप' ने काव्यस्वरों में भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेयुप के मंत्री श्री जितेन्द्र सालेचा ने भी काव्यमय प्रस्तुति दी। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। तारानगर प्रवास कर गुरु-सन्निधि में पहुंचने वाली समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्राचीन साहित्य में पुरुष के लिए बहत्तर कलाओं का उल्लेख मिलता है। यदि व्यक्ति उनमें पारंगत हो जाता है, किन्तु धर्म की कला को नहीं सीखता तो वह धर्म की दृष्टि से अपंडित ही कहलाता है। मनुष्य का जीवन धर्मयुक्त होना चाहिए। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत जीने की कला है, धर्म की कला है। यदि छोटे-छोटे नियम जीवन में उतर जाएं तो जीवन कितना अच्छा बन सकता है। जिस व्यक्ति में संयम और त्याग की चेतना नहीं होती, उसका जीवन धार्मिक दृष्टि से उन्नत नहीं बन सकता। हमारी हर प्रवृत्ति में संयम रहे तो हमारा जीवन पवित्र रहेगा।'

पूज्यप्रवर ने भारत को ज्ञान का भंडार और ऋषि-महर्षियों की तपःस्थली बताते हुए देशवासियों से नैतिक और नशामुक्त रहने का आह्वान किया। आचार्यवर ने 'नशामुक्त जसोल' अभियान को सघनता के साथ गतिमान बनाने की प्रेरणा भी प्रदान की।

विकास महोत्सव का भव्य आयोजन

२५ अगस्त। परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में विकास महोत्सव का समायोजन हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री लालचन्द सिंघी ने सामाजिक गतिविधियों का लेखाजोखा प्रस्तुत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने केन्द्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष एवं मंत्री के पदविसर्जन पत्र पूज्यचरणों में समर्पित किए। साध्वीवृन्द एवं समणीवृन्द ने पृथक-पृथक समूहगीतों का संगान किया। साध्वी रतिप्रभाजी, साध्वी ललितकलाजी एवं साध्वी नंदिताश्रीजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम पावन आचार्यप्रवर द्वारा इस अवसर पर प्रस्तुत विशेष उद्‌बोधन इसी विज्ञप्ति में प्रकाशित है। पूज्यवर ने विकास महोत्सव के प्रसंग पर विशेष रूप से रचित गीत का भी संगान किया। वह गीत भी इसी विज्ञप्ति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की सूझबूझ से प्राप्त अवदान का ही परिणाम है कि आज हम विकास महोत्सव मना रहे हैं। विकास सबको प्रिय होता है। तेरापंथ धर्मसंघ विकास की ऊंचाइयों पर खड़ा है। आचार्य भिक्षु ने इसके विकास की नींव रखी। उत्तरवर्ती आचार्यों ने उस बुनियाद पर विकास का भवन खड़ा किया। विकास महोत्सव का सीधा संबंध नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी से है, जिन्होंने धर्मसंघ में विकास की नई-नई लकीरें खींचीं। आचार्य तुलसी ने अपने जीवन में नये-नये प्रयोग किए। उनका विरोध हुआ, किन्तु वे संघर्षों में झुके नहीं। अपने संकल्प बल से संघ में विकास का क्रम जारी रखा। आचार्यश्री महाश्रमणजी विकास के जो भी नए क्षितिज उद्‌घाटित करेंगे, उसके लिए हम सभी प्राणप्रण से समर्पित हैं। आपका जो भी दिशा-निर्देश आज मिलेगा, धर्मसंघ उसी ओर अपने कदम आगे बढ़ाएगा।'

कार्यक्रम में साध्वी यशोधराजी ने शासनश्री संबेधन प्रदान करने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति सादर कृतज्ञता व्यक्त की। साध्वी जिनप्रभाजी ने 'शासनश्री' संबोधन प्राप्त साध्वियों के प्रति शुभाशंसा व्यक्त करते हुए पूज्यवर के अनुग्रह के प्रति कृतज्ञभाव व्यक्त किए। प्रभारी व्यवस्था के स्थगन की घोषणा के पश्चात साध्वीश्री कल्पलताजी एवं शासनश्री मुनि किशनलालजी ने इतने वर्षों तक कार्य करने का अवसर प्रदान करने हेतु आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। शासनसेवी श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ ने साढ़े ग्यारह

बजे तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक के रूप में आचार्यवर से मंगलपाठ सुना और अपनी संक्षिप्त भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

जीवन के हर पड़ाव पर आवश्यक है विवेक

२६ अगस्त। विकास महोत्सव का अवशिष्ट कार्यक्रम। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। साध्वी संवेगप्रभाजी एवं साध्वी संकल्पप्रभाजी ने अपने विचार रखे। तेरापंथ विकास परिषद के नवनियुक्त संयोजक श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ ने अपने वक्तव्य में सन १९६२ से स्वयं के संघ सेवा से जुड़ने तथा आचार्य तुलसी के उपकार की चर्चा करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद की कामना की। मुमुक्षु ख्वाहिश चोरड़िया (मुम्बई) ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए दीक्षा की प्रार्थना की। मुमुक्षु की मां श्रीमती दीपा चोरड़िया एवं नानी श्रीमती रंजना संचेती ने भी अपने विचार रखे। आचार्यवर ने महती कृपा कर मुमुक्षु ख्वाहिश को १६ जनवरी २०१३ को बालोतरा में मुनि दीक्षा देने की अनुमति प्रदान की।

'मूल्य विवेक का' विषय पर अपने मंगल प्रवचन में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'विवेक एक चक्षु है। इसका बड़ा मूल्य है। जिसके पास निर्मल विवेकरूपी चक्षु है, वह जागृत प्रज्ञा वाला माना जाता है। जो कर्तव्य एवं अकर्तव्य को नहीं जानते, वे मनुष्य होते हुए भी पशु सदृश हैं। विवेक और ज्ञान के द्वारा चरित्र का विकास हो सकता है। चक्षु का मूल्य है तो अन्तश्चक्षु का भी कम महत्त्व नहीं है। विवेक का तात्पर्य है पृथक्-पृथक् करना। जीवन के हर पड़ाव पर विवेक आवश्यक है। विवेक धर्म है।

मुम्बई चतुर्मास की पुरजोर प्रार्थना

प्रवचनोपरान्त मुम्बई तेरापंथ समाज के लगभग डेढ़ हजार लोगों की ओर से सन् २०२० के चतुर्मास तथा आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी मुम्बई में करने की पुरजोर प्रार्थना प्रस्तुत की गई। इस संदर्भ में मुम्बई ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने श्रीमती मीनाक्षी भुतोड़िया के स्वर पर अपनी आकर्षक प्रस्तुति दी। आयोजक संस्था तेरापंथी सभा, मुम्बई के अध्यक्ष श्री विनोद कच्छारा, श्री भीखमचन्द नाहटा, शासनसेवी श्री बाबूलाल कच्छारा, पूर्व अध्यक्ष श्री भंवरलाल कर्णावट, जैन समाज की ओर से श्री महावीर लोढ़ा एवं प्रायोजक श्री गणपत कोठारी ने अपने भावपूर्ण विचार रखे। लगभग दस मिनट की वीडियो क्लिपिंग प्रस्तुत की गई, जिसमें महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री शंकरनारायण, विधायक श्री रमेशसिंह ठाकुर, महाराष्ट्र के मुख्य सचिव श्री जयन्त बांठिया, महापौर आदि के सन्देशों के साथ चतुर्मास की उपयोगिता प्रदर्शित की गई है।

महाराष्ट्र सरकार की ओर से उत्पादन शुल्क एवं सौर ऊर्जा मंत्री श्री गणेश नाइक ने कहा--'मुझे आचार्य तुलसी के दर्शनों का सौभाग्य नहीं मिला, पर मैं उनकी विचारधारा से प्रभावित हूं। आचार्य महाप्रज्ञ के मैंने कई बार दर्शन किए और उनका प्रवचन सुना। मेरा पुत्र संजीव जब नवी मुम्बई का महापौर था, तब सरकारी स्कूलों में जीवनविज्ञान लागू किया गया, जो आज भी चल रहा है। मुम्बई का अपना अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व है। आचार्यश्री मुम्बई पधारें तो बहुत अच्छा वातावरण निर्मित होगा।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रार्थना के संदर्भ में कहा--'मुम्बई श्रावक समाज व गणेश नाईकजी ने मुम्बई की प्रार्थना प्रस्तुत की। नाईकजी आचार्य महाप्रज्ञ के पास कई बार आए हैं। हमारे पास भी केलवा में आए। ये 'कल्याणमित्र राजनेता' के रूप में संबोधित हैं। मैं मुम्बई की प्रार्थना के संदर्भ में कुछ कहना चाहूंगा--पहली बात तो यह है कि जिस ढंग से आप लोगों ने प्रार्थना की है, उसे मैं बहुत शक्तिशाली मानता हूं। दूसरी बात यह कि आपने जो अर्ज की है, मैं उसके औचित्य को स्वीकार करता हूं। तीसरी बात यह कि मैं अपने बारे में अवगति दे रहा हूं--मेरी पूर्वांचल यात्रा घोषित है। राजस्थान से दूर सन् २०१४ का चतुर्मास दिल्ली, सन् २०१५ नेपाल, सन् २०१६ असम, सन् २०१७ बंगाल एवं सन् २०१८ में ओडिसा प्रवास निर्णीत है। यदि ओडिसा के बाद दक्षिण की यात्रा करना संभव हुआ तो सन् २०२० तक

मैं बंध गया हूं। साधु-साध्वियां अधिकांशतः राजस्थान में प्रवास करते हैं। यहां सोचने का विषय है कि सात-आठ वर्ष तक संघ के साधु-साध्वियों से दूर रहूं। इतने वर्ष तक दूर रहना सोचने का विषय है। इस संदर्भ में यह भी देखना है कि इतने लंबे समय तक दूर रहने की संघ अनुमति देता है या नहीं? इसके साथ यात्रा से राजस्थान लौटते ही तुरन्त मुम्बई जाना कैसा रहेगा? राजस्थान आने के बाद यहां कितना समय लगाना है, अभी कहना कठिन है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मेरे मन में यह आइडिया है कि जिस क्षेत्र के लिए परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने जाना घोषित कर रखा था, वहां मुझे जाना है, इसीलिए मैंने कच्छ यात्रा घोषित की है। जहां गुरुदेव महाप्रज्ञजी का पदार्पण नहीं हुआ, वे क्षेत्र मेरी सूची में नम्बर एक पर हैं। नेपाल, असम में तो किसी भी आचार्य का पदार्पण नहीं हुआ है। कोलकाता, बंगाल, ओडिसा व दक्षिण में गुरुदेव महाप्रज्ञजी नहीं पधारे। ये क्षेत्र इसी कारण मेरी प्राथमिकता की सूची में हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मुम्बई में मर्यादा महोत्सव किया, उस समय मैं उनके साथ था। इस कारण मुम्बई मेरी दो नम्बर की सूची में है। आपको अब इतनी बड़ी संख्या में आने की जरूरत नहीं है। आपका एक पत्र या ई-मेल ही पर्याप्त है। मैं आपकी अर्ज और बलवती भावना का आदर करता हूं, पर अभी वचनबद्ध होना मुश्किल है।'

प्रार्थना कार्यक्रम का संचालन मुम्बई सभा के मंत्री श्री दिनेश सुतरिया ने किया। उल्लेखनीय है--वृहत्तर मुम्बई के लगभग हजार भाई-बहन स्पेशल ट्रेन से २४ अगस्त को जसोल पहुंचे। लगभग पांच सौ लोग अन्य साधनों से पहुंचे। लगभग डेढ़ हजार लोगों ने २५ अगस्त को रात्रि सेवा-उपासना में अपनी प्रस्तुति दी। २६ अगस्त को साध्वीप्रमुखाजी के प्रवास स्थल से एक विशाल रैली के साथ 'गुरुदेव मुम्बई पधारो' के गगनभेदी नारे लगाते हुए रैली समवसरण में पहुंची। २६ अगस्त को सायं मंगलपाठ श्रवण के साथ

स्पेशल ट्रेन मुम्बई की ओर प्रस्थित हो गई। इस विशाल संघ में मुम्बई महानगर के समीपवर्ती सभी क्षेत्रों के लोग सम्मिलित थे।

योग में न आए क्रोध

२७ अगस्त। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में कानोड़ से पर्युषण यात्रा संपन्न कर लौटी समणी मंजुप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखे। तुलसी अमृत विद्यापीठ कानोड़ के संरक्षक श्री सवाईलाल पोखरना, अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल नागोरी ने अपने विचार रखे। श्रीमती बोभी जैन (केसिंगा) ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। ज्ञातव्य है--कुछ समय पूर्व उनके नौ वर्षीय पुत्र विशाल जैन का अपहरण हो गया था। उस समय श्रीमती जैन ने यह संकल्प किया था कि आज रात तक मेरा बेटा घर वापस आ गया तो इसे स्वामी भीखणजी की कृपा मानूंगी और यदि मेरे बेटे की दीक्षा लेने की भावना हुई तो मनाही नहीं करूंगी। संकल्प फला और उनका पुत्र विशाल रात को ही घर पहुंच गया। वे सपरिवार गुरु-दर्शन हेतु पहुंची। विशाल के पिता श्री लक्ष्मीनारायण जैन की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने उन्हें **'श्रद्धानिष्ठ युवा श्रावक'** के रूप में संबोधित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'क्रोध को विफल करना बहुत जरूरी है। अनादिकाल से हम कषाय से आक्रान्त हैं। निमित्त मिलने पर कषाय उभर आते हैं। मन के प्रतिकूल घटना घटित होने पर शान्त बने रहना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति के लिए समाज में ही नहीं, परिवार में भी स्थान बनाना कठिन हो जाता है। पारिवारिक, सामाजिक और व्यावसायिक--सभी दृष्टियों से क्रोध त्याज्य है। वैसे क्रोध नवें गुणस्थान तक विद्यमान रहता है, पर वह हमारे मन, वचन व कायरूप योग में नहीं आना चाहिए। उपशम के द्वारा क्रोध को जीतना चाहिए व श्रावक जीवन को साधनामय बनाना चाहिए।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

पर्युषण यात्रा : उपासक-उपासिकाओं की सूची-२
(गतांक से आगे)

७७. श्री महेन्द्र सिंघवी (मुम्बई) टिंडीवनम
श्री ललित परमार (मुम्बई)

७८. श्री सुरेश बाफना (सूरत) चिकमगलूर
श्री अमृत मेहता (सूरत)

७९. श्री कान्ति सिसोदिया (सूरत) पालघर
श्री शान्तिलाल संचेती (मुम्बई)

८०. श्रीमती सरिता श्यामसुखा (कोल.) दार्जिलिंग
श्रीमती निर्मला सेठिया (कोलकाता)

८१. श्रीमती सरोज दूगड़(कोलकाता) धूपगुड़ी
श्रीमती मंजु पगारिया(खगड़ा)

८२. श्री रामेश्वरप्रसाद जैन(भगवतगढ़) खेराकलां
श्री राजेन्द्र पुगलिया(श्रीडूंगरगढ़)

८३. श्री कोमल डांगी (सूरत) गंगटोक
श्री प्रवीण मेड़तवाल (सूरत)

८४. श्री विनोद बोरदिया (डीसा) दीनहट्टा
श्री हनुमानमल दूगड़ (इरोड)

८५. श्री सुशील बाफना (जलगांव) दलखोला
श्री कमल सेठिया (कोलकाता)

८६. श्री दीपचन्द बोकड़िया (जसोल) अलीपुरद्वार
श्री सूरजमल सूर्या (धुलिया)

८७. श्रीमती प्रतिभा चोपड़ा(मुम्बई) वापी
श्रीमती पारसदेवी बड़ाला(दौलतगढ़)
श्रीमती आशा चोरड़िया(बारडोली)

८८. श्रीमती निर्मला जैन (रायपुर) जाखलमंडी
श्रीमती सविता बोहरा (केलवा)
श्रीमती रेखा सिंघवी (केलवा)

८९. श्रीमती प्रेमलता बोथरा (जयपुर) नरवानामंडी
श्रीमती विजया छल्लाणी (जयपुर)
श्रीमती संतोष धारीवाल (जयपुर)

९०. श्रीमती विमला दूगड़ (मुम्बई) वणी
श्रीमती कुसुम इन्दोदिया (मुम्बई)
श्रीमती कमला चोरड़िया (मुम्बई)

९१. श्रीमती विमला डागलिया(मुम्बई) बज्जू
श्रीमती शोभादेवी डागा(बालोतरा)
सुश्री मिलन संकलेचा (टापरा)
श्रीमती श्रीया गुलगुलिया(गंगाशहर)

९२. श्री घीसूलाल नाहर(जयपुर) ईडवा
श्री मनसुख चपलोत (मुम्बई)

९३. श्री अशोकभाई संघवी(वाव) फतेहाबाद
श्री नरेन्द्र मेहता (भुज)

९४. श्री उत्तमचन्द बोहरा(आमेट) तूफानगंज
श्री धर्मचन्द चपलोत (मरोली)

९५. श्री गणपत जैन (मुम्बई) कोपरखेरना
श्री पारसमल संचेती (उधना)

९६. श्री ताराचन्द भंडारी(जयपुर) मरोली
श्री उत्तमचन्द डागा(अहमदाबाद)

९७. श्रीमती मंजु पीपाड़ा(कल्याणपुरा) उदयगढ़
सुश्री दीपिका जैन (कल्याणपुरा)

९८. श्री रतन सिंयाल (मुम्बई) दुर्गापुर
श्री अशोक परमार (सूरत)

९९. श्री रणजीत कोठारी (मुम्बई) सूरतगढ़
श्री नरेश चोपड़ा (सूरत)

१००. श्रीमती सरोज बांठिया (सूरत) गोवा
श्रीमती लीला मेहता (सूरत)

१०१. श्री डालचन्द कोठारी (मुम्बई) दादर
श्री नानालाल कोठारी (अहमदाबाद)

१०२. श्री सुरेन्द्र सालेचा (जसोल) केसूर
श्री स्वरूप दांती (बालोतरा)
श्री पारसमल बाफना (बारडोली)

१०३. श्रीमती पुष्पा गन्ना (बेंगलुरु) नंजनगुड
श्रीमती लता संकलेचा (बेंगलुरु)
श्रीमती सरस्वती बाफना (बेंगलुरु)

१०४. श्रीमती निर्मला नौलखा (मुम्बई) भयन्दर
श्रीमती सरला भुतोड़िया(हैदराबाद)
श्रीमती पारस मेहता (मुम्बई)

१०५. श्रीमती चन्द्रा बड़ाला (मुम्बई) खेड़ब्रह्मा
श्रीमती सरोज संचेती (अहमदाबाद)
श्रीमती पिस्तांदेवी छाजेड़ (अहमदाबाद)

१०६. श्रीमती नेमकंवर जीरावला (सूरत) जोबनेर
श्रीमती शोभादेवी डागा
सुश्री मिलन संकलेचा

१०७. श्रीमती शान्ता नौलखा (लावासर.) फलसूंड
श्री पुखराज बाफना (मुम्बई)
श्री अनिल चिंडालिया (उधना)

संबोधन-अलंकरण

२१०वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यवर ने जिन श्रावक-श्राविकाओं को उनकी श्रद्धा-भक्ति और सेवा का उल्लेख करते हुए विशिष्ट संबोधन से संबोधित किया, उनके नाम इस प्रकार हैं--

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री चंपालालजी बागरेचा (पारलू)
२. श्री राणमलजी लच्छीरामजी छाजेड़ (जसोल)
३. श्री ओमप्रकाशजी पीरूमल जैन (भिवानी)
४. स्व.भंवरलालजी गोगुलालजी बाबेल (बागोर)
५. स्व. छगनराजजी तातेड़ (जोधपुर)
६. स्व. चांदमलजी डूंगरवाल (चेन्नई)
७. स्व. धनपतसिंहजी जैन (हिसार)

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती मीरादेवी बैद (गंगाशहर)
२. श्रीमती सुआदेवी सुराणा (पारलू)
३. श्रीमती उमरावदेवी बागरेचा (जसोल)
४. श्रीमती अणचीदेवी छाजेड़ (कवास)
५. श्रीमती किरणदेवी धोका (पाली)
६. श्रीमती खमादेवी जीरावला (समदड़ी)
७. श्रीमती शान्तिदेवी धोका (पाली)
८. श्रीमती जमनादेवी बालड़ (बायतू)
९. श्रीमती मोहनीदेवी जीरावला (समदड़ी)
१०. श्रीमती उमरावदेवी ढेलड़िया (जसोल)
११. श्रीमती सुन्दरदेवी बैदमूथा (बालोतरा)
१२. स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी कोटेचा (बोरावड़)
१३. स्व. श्रीमती बक्सूबाई विनायकिया(जोधपुर)
१४. स्व. श्रीमती बुग्गीदेवी डागा (सरदारशहर)
१५. स्व. श्रीमती चुकीदेवी तलेसरा (बालोतरा)
१६. स्व. श्रीमती निर्मलादेवी जैन (मुजफ्फरनगर)
१७. श्रीमती सुवटीदेवी जीरावला (असाढा)
१८. श्रीमती लूणीदेवी तातेड़ (जसोल)
१९. श्रीमती पारसीदेवी बांठिया (पाली)
२०. श्रीमती सुन्दरदेवी जीरावला (समदड़ी)
२१. श्रीमती मीरादेवी कंकुचोपड़ा (बालोतरा)
२२. स्व. श्रीमती गट्टूदेवी सिंघी (श्रीडूंगरगढ़)
२३. स्व. श्रीमती झंकारदेवी संचेती (हैदराबाद)
२४. स्व. श्रीमती चंपाबाई हिरण (आमेट)
२५. स्व. श्रीमती दयावंतीदेवी जैन (जैतो)
२६. स्व. श्रीमती सुमेरीदेवी आंचलिया (गंगाशहर)
२७. स्व. श्रीमती धापूदेवी दूगड़ (सरदारशहर)
२८. स्व. श्रीमती अणचीदेवी बेंगानी (बीदासर)
२९. स्व. श्रीमती भंवरीदेवी बोथरा (गंगाशहर)
३०. स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी कोठारी (बीकानेर)
३१. स्व. श्रीमती नारंगीदेवी गादिया (रानी स्टेशन)

तपोनिष्ठ श्राविका

१. श्रीमती वरजूदेवी बालड़ (बालोतरा)
२. श्रीमती धर्मीदेवी तलेसरा (बालोतरा)

- २६ अगस्त। पूज्यवर ने श्राविका श्रीमती मोहिनीदेवी पारख (आगरा) तथा श्राविका श्रीमती भंवरीदेवी चोरड़िया (नोखा-जलगांव) को **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया है।
- ३० अगस्त। पूज्यप्रवर ने मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) को **'तपोमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

दीक्षा आदेश

२५ अगस्त। विकास महोत्सव के कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जसोल की छह मुमुक्षु बहनों को जसोल में ५ नवम्बर को आयोजित दीक्षा समारोह में दीक्षित करने की घोषणा की। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व पूज्यप्रवर इसी समारोह के लिए चार मुमुक्षु भाइयों तथा चार मुमुक्षु बहनों को पहले ही दीक्षा का आदेश प्रदान कर चुके हैं। जसोल की नवीन घोषित दीक्षार्थी बहनों के नाम इस प्रकार हैं--

१. मुमुक्षु कविता	साध्वी दीक्षा	४. मुमुक्षु मोक्षा	साध्वी दीक्षा
२. मुमुक्षु खुशबू	साध्वी दीक्षा	५. मुमुक्षु मर्यादा	समणी दीक्षा
३. मुमुक्षु पूजा	साध्वी दीक्षा	६. मुमुक्षु भावना	समणी दीक्षा

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्री छगनराजजी तातेड़ (सरदारपुरा-जोधपुर) की स्मृति में उनके सुपुत्र जिनेश्वरकुमार, अमृतलाल, मांगीलाल तातेड़ द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रीमती सरिता चोपड़ा (पुत्रवधू-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री सुमेरमलजी चोपड़ा, धर्मपत्नी-श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर) के २७ दिनों की तपस्या के उपलक्ष्य में श्री नेमचन्द चोपड़ा (गुलाबबाग) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती सुशीलाबाई (पुत्रवधू-श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती उगमबाई एवं घाटे के कासीद स्व. मांगीलालजी बोहरा, धर्मपत्नी-श्री मदनलाल बोहरा, पीपलीनगर-चेन्नई) के मासखमण तप की संपन्नता के उपलक्ष्य में गजेन्द्र, मुकेश, रौनक, विभा एवं मयंक बोहरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती गरिमा दफ्तरी (धर्मपत्नी-श्री प्रकाशजी दफ्तरी, सरदारशहर, सुपुत्री-श्री छत्तरसिंह-वीणादेवी भंसाली, श्रीडूंगरगढ़-अहमदाबाद) की स्मृति में गौरवकुमार-पूजा एवं गुलशनकुमार भंसाली द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री शांतिलालजी सेठिया (बगड़ीनगर-बिल्लुपुरम) की पांचवीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती कमलादेवी सेठिया एवं सुपुत्र व पूत्रवधू सुशील-संतोष, सुपौत्र संदीप सेठिया, चेन्नई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती मनोहरदेवी सुराणा (धर्मपत्नी-श्री शुभकरण सुराणा, सरदारशहर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र विजयसिंह, कमलसिंह, जतन, सुपौत्र शुभांषु, लोकेश, हेमन्त सुराणा द्वारा प्रदत्त।

- जसोल में परमपूज्य आचार्यप्रवर आदि संत ५२ एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा आदि श्रमणी ९२, सर्व १४४ सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर ने चतुर्मास के पश्चात जसोल से टापरा तक का संभावित यात्रा पथ निर्णीत कर दिया है जो विज्ञप्ति क्रमांक १९ में प्रकाशित हो चुका है। दिसम्बर २०१२ से जनवरी २०१३ तक दर्शन-सेवा हेतु आने वाले श्रद्धालु उसी के अनुसार अपना कार्यक्रम सुनिश्चित करें।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : १-९-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**